उपसंहार

मनुष्य अपनी अस्मिता के लिए सदैव से ही संघर्ष करता रहा है। न केवल भौतिक, वैचारिक अपितु मानवीय अस्मिता का प्रश्न भी उसके मन में रहा है। आजादी के 67 साल बाद भी भारत में सामाजिक न्याय-व्यवस्था पूर्ण रूप से स्थापित नहीं हो पाई है। आज भी अनेक प्रकार की घटनाएँ देखने को मिल जाती हैं जिन्हे देखकर हमें यह नहीं लगता हैं कि हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं और विश्वशक्ति बनने का सपना देख रहे हैं। हम वैश्वीकरण के दौर में जी रहे हैं जहाँ एक ओर सीमाओं को तोड़ने हो रही है वहीं दूसरी ओर इस बाजारीकरण के दौर में आज भी जातीय विद्वेष को पूर्णतः समाप्त नहीं कर पाये हैं। भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही जाति-भेद की मानसिकता आज भी हमारे समाज मे लगभग उसी रूप में विद्यमान है, जो अवसर पाते ही बाहर निकल आती है।

स्वदेश दीपक के नाटक **'कोर्टमार्शल'** के माध्यम से आज के तथाकथित सभ्य समाज में व्याप्त जातिगत विभेद को उजागर करने का प्रयास किया गया है। भारतीय समाज में सदियों से दबायी, कुचली गयी जाति को दलित की संज्ञा दी गई है उन्हें भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति का दर्जा दिया गया है। इस जाति ने सदियों से अपमान का दंश झेला है। भारतीय इतिहास में अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख मिलता है।

स्वतंत्रता के बाद दलितों की स्थिति में थोड़ा-बहुत परिवर्तन आना शुरू होता है। आरक्षण तथा अन्य बदलावों के कारण राजनीति में इनकी सहभागिता बदती है तथा सरकारी क्षेत्रों मे इनके रोजगार के अवसर निश्चित किये गए। इससे इनकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। शिक्षा तथा सामाजिक आंदोलन के कारण इनमें जागरूकता का प्रसार हुआ है और कुछ हद तक धार्मिक, रूढ़ियों, पाखण्डों आदि कुप्रथाओं से मुक्त हुए हैं।

इतना सब कुछ होने के पश्चात भी दलित अपनी अस्मिता के लिए निश्चिंत नहीं हो पा रहे है, उन्हें किसी न किसी रूप में जाति का दंश झेलना पड़ जाता है। सरकार ने उन्हें संवैधानिक अधिकार तो प्रदान किये हैं परन्तु सामाजिक समानता लाने में लम्बे समय का इन्तजार करना पड़ सकता है। **'कोर्टमार्शल'** नाटक में दलितों की अस्मिता का प्रश्न सशक्त रूप से उभर कर सामने आता है। जातीय दंश की पीड़ा को झेलता हुआ रामचन्दर स्वयं का ही नहीं अपितु पूरे दलित

समाज का प्रतिनिधित्व करता है। इसी प्रकार बी॰ डी॰ कपूर और डॉ॰ गुप्ता भी मध्यकालीन सामन्ती वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब भी इस प्रकार की अति हुई है तो इतिहास में उनका विद्रोह भी हुआ है।

दलितों पर हमेशा अपना राज कायम रखने की मानसिकता वाले ऐसे लोगों की आज भी स्थिति यह है कि वह निम्न जाति के लोगों को दिशानिर्देश तो देने में विश्वास रखते हैं परंतु उन्हें कभी समझने का प्रयास नहीं करते। उच्च जाति के व्यक्ति दलित को उसकी पुरानी अवस्था में ही देखने का अभ्यस्त है। नाटक में उच्चवर्गीय अफसर पात्रों के माध्यम से स्वदेश दीपक ने इस प्रवृत्ति को मुखरता से उठाया है। हमारे समाज में अस्पृश्यता, निम्न जाति के प्रति हीन भावना रग-रग में बसी हुई है, जिसे सामन्तवाद की आधारभूमि के लिए धर्म और संस्कृति ने तैयार किया है। सवर्णों ने हमेशा से ही अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पक्ष को मजबूत बनाए रखा। साथ ही दलितों की ऐतिहासिक अस्मिता को नष्ट कर उनके मन में हीन भावना भरने का प्रयास किया गया। किसी भी व्यक्ति या समुदाय पर उसके वर्तमान के साथ-साथ उसकी जातीय तथा ऐतिहासिक चेतना का प्रभाव रहता है। एक सशक्त इतिहास उसके लिए मजबूत ढाँचे का काम करता है। नाटक में जातिसूचक शब्दों और पुरखों का काम की याद दिलाकर उसकी रीढ़ को तोड़ने का प्रयास किया जाता है। यहाँ लेखक की मनोवैज्ञानिक दृष्टि का प्रमाण हमे मिलता है। रामचन्दर द्वारा दौड़ प्रतिस्पर्धा जीतने के बाद बी॰ डी॰ कपूर के मन में उपजी जाति कुंठा, जातिगत द्वेष के साथ-साथ वर्गगत द्वेष का भी पर्दाफाश करता है। इस कारण युवा रामचन्दर के मन में उपजे आक्रोश तथा आक्रामक और अलोकतांत्रिक प्रतिक्रिया के बाद भी पाठक का मन उसी का पक्ष लेता रहता है। लगातार होते हुए मानवीय अवमूल्यन और संवेदना के ह्रास पर यह नाटक पुनर्विचार करने के लिए विवश करता है।